ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS: परिवार प्रणाली, जाति-प्रथा, खान-पान, मनोरंजन, दास-प्रथा, आभूषण, वेषभूषा, नैतिक स्तर इत्यादि |

भारत की सामाजिक स्थिति :- गुप्तकाल के सन्दर्भ में

Sh. Ishwar Singh Assistant Professor of History Sakshi Malik Govt. College Mokhra (Rohtak)

ABSTRACT

प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्तकाल को "स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है | गुप्तकाल केवल राजनैतिक दृष्टी से ही महत्वपूर्ण नहीं था बल्कि सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक दृष्टी से भी इस काल का बहुत महत्व था | प्रस्तुत शोध-पत्र में गुप्तकालीन सामाजिक स्थिति के बारे में विवरण प्रस्तुत किया गया है | इस शोध-पत्र में गुप्तकालीन समाज में परिवार प्रणाली, जाति-प्रथा, खान-पान, वेशभूषा, मनोरंजन, दास-प्रथा, आभूषण एवम लोगो के नैतिक स्तर के बारे में वर्णन किया गया है |

संयुक्त परिवार प्रणाली : गुप्तकालीन भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचलन था |परिवार में सबसे बड़ी आयु का व्यक्ति परिवार का मुखिया होता था | परिवार के सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते थे |1 वह परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता था | पिता परिवार की सम्पति का मालिक होता था |पिता के जीवनकाल में परिवार के विभाजन को बुरा माना जाता था | संयुक्त परिवारों में माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, दादा-दादी, पुत्र-पुत्रवधू, भतीजे, पौत्र-पौत्रियों आदि सभी इकट्ठे रहते थे |ऐसे परिवारों का जब भी विभाजन होता था तो परिवार की सम्पति का सभी पुत्रो में एक समान विभाजन होता था |यदि किसी परिवार में पुत्र न हो तो ऐसी स्थिति में पुत्री भी पैतृक सम्पति की मालिक बन सकती थी | दत्तक पुत्रो को समाज में अच्छी दृष्टी से नहीं देखा जाता था | 2

स्त्रियों की स्थिति : - गुप्तकाल तक आते आते स्त्रियों की स्थिति में काफी गिरावट आई |इस काल में कन्याओं का विवाह १३ या १४ वर्ष की छोटी आयु में कर दिया जाता था। जिस कारण उनके लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया था | साधारणतया एक पत्नी-प्रथा प्रचलित थी। केवल शासक और धनवान वर्गों में बहु पत्नी प्रथा के प्रमाण प्राप्त होते है|३ गुप्तकाल में विधवाओं को पुनर्विवाह करने का अधिकार था परन्तु विवाह न करने वाली विधवाओं को सात्विक जीवन व्यतित करना होता था | विदेशियों के प्रभाव के कारण उच्च कुलों में सती प्रथा कही कही पर आरम्भ हो गई थी ,परन्तु इसकी मान्यता अधिक नहीं थी | उतरी भारत में कुछ सैनिक जातियों के परिवारों में बड़े पैमाने पर सती प्रथा का प्रचलन था | भारत में सती प्रथा का पहला ऐतिहासिक प्रमाण ५१० AD के भानुगुप्त के एरण अभिलेख से मिलता है। जिसमे किसी गोपराज (सेनापति) की मृत्यु पर उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख है |४ गुप्तकालीन समाज में स्त्रियां सम्पति की स्वामिनी हो सकती थी | याग्वल्य्क्य स्मृति में पत्नी को भी पति की सम्पति का अधिकारी बताया गया है | उसके अनुसार पुत्र के आभाव में पति की मृत्यु हो जाने पर उसकी सम्पति पर सर्वप्रथम अधिकार उसकी पत्नी का होगा और उसके पश्चात उसकी पुत्रियों का |गुप्त काल में स्त्रियाँ वेद मंत्रो का उच्चारण करने की अधिकारी थी | अमरसिंह के अमरकोश में स्त्री शिक्षक और वेद पाठियो के बारे में विवरण प्राप्त होता है | इस काल में पर्दा-प्रथा का प्रचलन भी था | परन्तु यह प्रथा केवल उच्च घरानों की स्त्रियों तक ही सिमित थी |साधारण स्त्रियों बिना पर्दा किये स्वतन्त्रतापूर्व घुमती फिरती थी। 5

दास-प्रथा : गुप्तकालीन समाज में दास प्रथा का प्रचलन था | युद्धबंदिओं और कर्जदारों को दास बना लिया जाता था | नारद ने 18 पारकर के दासों का वर्णन किया है | प्रो० आर .एस शर्मा के कथानुसार तो " गुप्तकाल में वर्ण व्यवस्था दुर्बल हुई और इस कारण दास प्रथा भी दुर्बल हो गई "|6 ऋणकर्ताओं, जुआरिओं एवं युद्धबंदिओं को दासता से मुक्त होने का अधिकार था | यदि कोई दास किसी अवसर पर अपने स्वामी के जीवन को बचा लेता था ,तो उसे दासता से मुक्त कर दिया जाता था | यदि किसी दासी के उसके मालिक से पुत्र उत्पन्न हो जाता था तो उसे भी दासता से मुक्त कर दिया जाता था | भारत के दासों की स्थिति पश्चिम देशों के दासों की अपेक्षा बहुत अच्छी थी | उनके साथ कठोर व्यवहार नहीं किया जाता था |7

खान-पान : गुप्तकालीन समाज में लोग साकाहारी और मासाहारी दोनों ही प्रकार का भोजन करते थे | चीनी यात्री फाहियान लिखता है कि "लोग शराब का प्रयोग नहीं करते थे | वह माँस प्याज और लहसुन भी नहीं खाते थे | केवल चांडाल लोग ही इन वस्तुओं का प्रयोग करते थे | वही मुर्गी तथा सूअर आदि पलते थे |" 8 स्मृति केवल इतना ही कहती है की उस स्त्री को मांस और मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए जिसका पति बाहर गया हो | इससे यह सिद्ध होता है कि स्त्रिया भी मांस और शराब का सेवन करती थी | दक्षिणी भारत में राज दरबारों में उच्च वर्ग में मांस से कई प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बनाये जाते थे |

वस्त्राभूषण : गुप्त काल के सहित्यिक ग्रंथो तथा कलाकृतिओं से इस समय के वस्त्र और आभूषण के बारे में जानकारी प्राप्त होती है | इस काल में वस्त्र रेशमी ,ऊनी, और सूती तीनो प्रकार के पहने जाते थे | साधारण व्यक्ति केवल धोती और चादर का प्रयोग करते थे | शको के प्रभाव के कारण कोट, ओवरकोट और पायजामों का प्रयोग भी शुरू हो गया था | 9 स्त्रियां पेटीकोट, धोती और अंगिया पहनती थी | शक स्त्रीयां जाकिट का प्रयोग करती थी | इस काल में पुरुष तथा स्त्रीयां दोनों ही सोने एवं चांदी के विभिन प्रकार के आभूषण पहनते थे | आभुषनों में टीका, कर्णफूल, मालाएं, अंगूठी, पायजेब इत्यादि का प्रयोग किया जाता था परन्तु 'नथ' का प्रयोग नहीं होता था | अजंता की गुफाओं के चित्रों से पता चलता है की स्त्रीयां अपने सिर के बालो को अनेक प्रकार से संवार कर रखती थी | इनको देखकर आधुनिक फैशनपरस्त महिलायें भी दंग रह जाती थी | इसके अतिरिक्त वे क्रीम पाउडर सुरखी आदि का साज-सज्जा के लिए प्रयोग करती थी |10

मनोरंजन : गुप्त काल में लोग अनेक प्रकार से अपना मनोरंजन करते थे जैसे : शिकार खेलना ,जुआ खेलना, रथों की दौड़, मूर्गों की लड़ाईयां इत्यादि | राजा और सामान्य लोग भी शिकार के शौकीन थे | गुप्तकालीन साहित्य ही नहीं बल्कि गुप्तकालीन मुद्राओं से भी राजाओं के आखेट प्रेम को दिखाया गया है |समाज में शिक्षित वर्ग का मनोरंजन नृत्य ,संगीत और नाटकों द्वारा होता था |गुप्त काल के लोग होली, दिवाली, दशहरा

इत्यादी त्योहारों को बड़ी धूमधाम से मनाते थे | फाहियान के विवरण से ज्ञात होता है की लोग पूरे जोश के साथ प्रतिवर्ष उत्सव भी मनाते थे उसने विशेषकर "रथयात्रा"के उत्सव का उल्लेख किया है जो लगभग दो रातों तक मनाया जाता था और जिसमे प्राय: सभी लोग शामिल होते थे | इस उत्सव में सारी रात दीपक जलते रहते थे और बड़ी धूमधाम से यह उत्सव चलता था | लोगों के मनोरंजन का एक एक महत्वपूर्ण दिन होता था |11

जाति प्रथा : प्राचीन काल से चली आ रही जाति -प्रथा गुप्त काल तक सामाजिक व्यवस्था का आधार बन चुकी थी | गुप्त काल में जाति बंधन पहले की अपेक्षा ज्यादा कठोर हो गए थे | गुप्त कालीन समाज मुख्य रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य एवं शुद्र में विभाजित था | समाज में ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान प्रप्त था, क्योकि गुप्त सम्राट उनकी सलाह से ही शासन-प्रबन्ध का संचालन करते थे | ब्राह्मणों को विशेष अधिकार भी प्राप्त थे | वे एक ही समय में तीन स्त्रीयों से विवाह कर सकते थे |ब्राह्मण चाहे कितना ही बड़ा अपराध कर ले ,उन्हें मृत्युदण्ड नहीं दिया जा सकता था |कठोर वर्ण व्यवस्था के अभाव में हमें "अनुलोम" (उच्च वर्ण के पुरुष का निम्न वर्ण की स्त्री से विवाह) और "प्रतिलोम" (निम्न वर्ण के पुरुष का उच्च वर्ण की स्त्री से विवाह) दोनों ही प्रकार के विवाह प्राप्त होते है |12

गुप्त काल में शुद्रों की स्थिति में काफी सुधार हुआ, उन्हें रामायण, महाभारत, और पुराणों को सुनने का अधिकार मिल गया था | 13 इस काल में अछूतों की संख्या में वृधि हुई, विशेषकर चांडाल में |चांडालो की स्थिति के बारे में चीनी यात्री फाहियान लिखते है कि चांडाल गाँव से बाहर रहते थे और मांस बेचते/खाते थे,वे अपने आगमन की घोषणा लकड़ी का एक टुकड़ा फेंक कर करते थे ताकि अन्य लोग उनके स्पर्स से बच सकें | 14 गुप्त काल में शूद्रों की भांति महिलाओं को भी रामायण ,महाभारत और पुराणों को सुनने की अनुमति और कृष्ण की पूजा करने की सलाह दी गई |

नैतिक स्तर : गुप्त कालीन लोग का नैतिक स्तर बहुत उच्चा था | वे ईमानदारी, सचाई, साहस एवं सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे | दान, उदारता, शिक्षा-प्राप्ति, वचन-पालन आदि मानवीय गुणों का पालन करते थे | मुख्यता ब्राह्मण और क्षत्रिय बहुत चरित्रवान थे | 15 गुप्त काल में धनि व्यक्ति निर्धनों, असहायों एवं धार्मिक व्यक्तिओं के लिए धन खर्च करना अच्छा मानते थे और अस्पताल व् धर्मशालाएं आदि बनवाते थे | वे मठों, विहारों और मंदिरों को दान में भूमि देते थे। और विभिन्न अवसरों पर ब्राह्मणों एवं भिक्षुओं को भोजन, वस्त्र इत्यादी देते थे | 16 इस प्रकार से पता चलता है की गुप्त कालीन समाज संपन्न, उदार एवं चरित्रवान था।

निष्कर्ष :- उपरोक्त विवरण के आधार पर यह सिद्ध होता है की गुप्त कालीन समाज चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र में विभाजित था | परन्तु इस काल में शुद्र वर्ण के लोगो तथा स्त्रीयों को रामायण, महाभारत और पुराणों को सुनने की अनुमति प्राप्त हुई | गुप्त कालीन समाज उदार, सम्पन, एवं चरित्रवान था।

सन्दर्भ :-

1 पाठक रश्मि, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास प्रकाशक : अर्जुन पब्लिशिंग हाउस , अंसारी रोड ,दरियागंज ,न्यू दिल्ली संस्करण - 2010 पृष्ठ० संख्या० 236
2 नागोरी, डॉ० एस .एल. श्रीमती कांता, प्राचीन भारत का सामाजिक , सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास प्रकाशक : राज पब्लिशिंग हाउस, गोविन्द मंदिर जयपुर संस्करण 2007 पृष्ठ० संख्या० 57
3 शर्मा, एल.पी. प्राचीन भारत प्रकाशक: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, संजय पैलेस आगरा संस्करण 2013 पृष्ट० संख्या० 297
4 वहीं.
5 नागोरी, एस.एल. श्रीमती कांता प्राचीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास प्रकाशक : राज पब्लिशिंग हाउस ,जयपुर संस्करण 2007 पृष्ट० संख्या० 57
6 शर्मा ,एल .पी .प्राचीन भारत प्रकाशक : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल संजय पैलेस आगरा संस्करण 2013 पृष्ट० संख्या० 296
7 नागोरी .एस .एल .,श्रीमती कांता प्राचीन भारत का सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास प्रकाशक राज पब्लिशिंग हाउस जयपुर संस्करण 2007 पृष्ट० संख्या० 59
8 पाठक रश्मि, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस अंसारी रोड, दरियागंज न्यू दिल्ली संस्करण 2010 पृष्ट० संख्या० 237
9 शर्मा ,एल .पी .प्राचीन भारत प्रकाशक : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ,संजय पैलेस आगरा संस्करण 2013 पृष्ट० संख्या० 298
10 नागोरी, एस.एल. श्रीमती कांता प्राचीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास प्रकाशक राज पब्लिशिंग हाउस जयपुर संस्करण 2007 पृष्ट० संख्या० 58
11 पाठक रश्मि, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास प्रकाशक अर्जुन पब्लिशिंग हाउस अंसारी रोड, दरियागंज न्यू दिल्ली संस्करण 2010 पृष्ट० संख्या० 239
12 शर्मा एल.पी. प्राचीन भारत प्रकाशक : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा संस्करण 2013 पृष्ट० संख्या० 296
13 शर्मा, रामशरण भारत का प्राचीन इतिहास प्रकाशक: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस आसफ अली रोड, न्यू दिल्ली संस्करण 2020 पृष्ट० संख्या० 229
14 वही.
15 शर्मा, एल. पी. प्राचीन भारत प्रकाशक: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा संस्करण 2013 पृष्ट० संख्या० 297
16 वही .पृष्ट० संख्या० 286